International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: 3049-2017
IJMH 2026; 3(2): 302-304
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 28-03-2026
Accepted: 22-04-2026
Publish : 23-04-2026

दवे हरिओम हर्षदभाई
शोधच्छात्र,
पारम्परिक-संस्कृत विभाग ,
वडोदरा-संस्कृत-महाविद्यालय ,
महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी,
वडोदरा

Correspondence:
दवे हरिओम हर्षदभाई
शोधच्छात्र,
पारम्परिक-संस्कृत विभाग ,
वडोदरा-संस्कृत-महाविद्यालय ,
महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी,
वडोदरा

श्रीमद् भगवद्गीता के प्रेरक संदर्भ

दवे हरिओम हर्षदभाई

सारांश: भारतीय संस्कृति में वेदों के अतिरिक्त अनेक शास्त्र और पुराणादि ग्रंथ ऐसे हैं जिससे मनुष्य के जीवन में चारों पुरुषार्थ प्राप्त करने के उपाय प्राप्त किये जा सकते हैं ऐसा ही एक ग्रंथ जो साक्षात श्री कृष्ण के मुखारविंद से प्रकट हुआ है जिसका नाम श्रीमद् भगवद् गीता है। इस ग्रंथ रत्न में व्यावहारिक जीवन के रहस्य प्रतिभाषित होते हैं। उपनिषद रूपी कल्पतरु से यह ग्रंथ प्रादुर्भूत हुआ जिससे समस्त ब्रह्मांड ने एवं समस्त मानवता के लिये अपूर्व कल्याणप्रद मार्ग प्रशस्त हुआ। इस ग्रंथ के अनेक पक्ष हैं तथापि इस निबंध में मैंने व्यावहारिक जीवन उपयोगी प्रेरक संदर्भों की चर्चा की है।

श्रीमदभगवतगीता की योजना महाभारत में की गई है[1] इसके अनुसार जीवन का आदर्श मानव कैसा होता है इस तथ्य को गीता में देखा जा सकता है क्योंकि गीता एक व्यावहारिक शास्त्र है जो अध्यात्म ज्ञान की पृष्ठभूमि में स्थित है। इस निबंध में भगवद् गीता का विषय विवेचन संस्कृत साहित्य में इसकी टीकाएँ रहस्य, व्यावहारिक जीवन के प्रेरक सूत्र जिसमें जन्म से मृत्यु पर्यन्त मार्ग निर्देशित किया है। अर्जुन को लक्ष्य बनाकर समस्त मानवों के लिये अनेक सूत्र प्रदान किये गये हैं। जैसे धर्म विषयक प्रेरक सूत्र, अर्थ विषयक, काम विषयक प्रेरक और मोक्ष विषयक प्रेरक सूत्र।

ग्रन्थ के रचनाकर : श्रीमदभगवदगीता के रचनाकर महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास हैं। वेदव्यास' हैं। "महर्षि वेदव्यास'" ने संस्कृत साहित्य में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान दिया 'है। महाभारत' के आदिपर्व में इनके जन्म का वृतान्त सविस्तार वर्णित है ।"[2] इनके पिता पाराशर मुनि थे तथा माता गन्धवती थीं। ये जन्म से ही कृष्णकाय थे और यमुनागर्भस्त द्वीप में जन्म लेने के कारण कष्णद्वैपायन कहलाये । ये जन्मते ही माता की आज्ञा से तपस्या करने लगे । उन्होंने वेद की रक्षा और ब्राह्मणों के प्रति अनुग्रह दिखाने के लिए वेद का विभाजन किया । इसी से इनका नाम 'वेदव्यास' हुआ ।

ग्रंथ परिचय: अट्ठारह अध्यायों में विभक्त 'श्रीमदभगवदगीता" " देववाणी सुशोभित ' सात सौ श्लोकों से युक्त है। 'श्रीमदभगवदगीता" को प्राचीनकाल में उपनिषद[3] कहा जाता था । श्रीमद्भगवदगीता महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग है ।[4] इस तथ्य का उल्लेख स्वयं महाभारत में कई स्थानों पर पाया जाता है ।[5] इस ग्रंथ के प्रथम से षष्ठ अध्याय पर्यन्त कर्मयोग, सप्तम से द्वादश अध्याय पर्यन्त भक्तियोग तथा त्रयोदश से अष्टादश अध्याय पर्यन्त ज्ञानयोग का प्रतिपादन किया गया है । श्रीमदभगवदगीता' का उपदेश अर्जन के विषाद को नष्ट करने के लिए दिया गया है अनुष्टुप छन्दों से युक्त प्रत्येक श्लोक एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। 'श्रीमद्भगवद्गीता" में वैदिक और औपनिषदिक सिद्धान्तों का. सांख्ययोगाभिमत सिद्धान्तों का एवं मौलिक विचारों का मणिकाञ्चन संयोग है । यह वह जीवन रस है, जिसके पान (रसास्वादन) से जीवन यात्रा की समस्याओं का निराकरण होता है। इस ग्रंथ में निःश्रेयस प्राप्ति के उपाय सुबोध तथा सरल भाषा में वर्णित किये गये हैं। इसमें 18 अध्याय हैं जिनका नामाभिधान इस प्रकार किया गया है—

अध्याय संख्या	अध्याय नाम	श्लोक संख्या
प्रथम अध्याय	विषाद योग	47
द्वितीय अध्याय	सांख्य योग	72
तृतीय अध्याय	कर्म योग	43
चतुर्थ अध्याय	ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	42
पंचम अध्याय	कर्मसंन्यासयोग	29
षष्ठ अध्याय	आत्मसंयमयोग	47
सप्तम अध्याय	ज्ञानविज्ञान योग	30
अष्टम अध्याय	अक्षरब्रह्म योग	28
नवम अध्याय	राजविद्याराजगुह्ययोग	34
दशम अध्याय	विभूतियोग	42
एकादश अध्याय	विश्वरूप दर्शन	55
द्वादश अध्याय	भक्ति योग	20
त्रयोदश अध्याय	क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	34
चतुर्दश अध्याय	गुणत्रयविभागयोग	27
पंचदश अध्याय	पुरुषोत्तम योग	20
शोडश अध्याय	दैवासुरसंपद्विभागयोग	24
17 वां अध्याय	श्रद्धात्रयविभाग योग	28
18 वां अध्याय	मोक्ष संन्यास योग	78
कुल श्लोक संख्या		**700**

संपूर्ण ग्रंथ में जो न्यून श्लोक वाले अध्याय द्वादश (भक्तियोग) 20 श्लोक तथा पंचदश अध्याय (पुरुषोत्तम योग) में 20 श्लोक हैं और सर्वाधिक श्लोक वाला अठारहवां अध्याय (मोक्ष संन्यास योग) है जिसमें 78 श्लोक हैं।

ग्रंथ के मुख्य विषय: यह ग्रंथ रत्न संस्कृत वाङ्मय में अत्यंत लघु होते हुए भी अमृत तुल्य गंभीर विषयों का संपुट है जैसे -

1. अध्यात्म पक्ष: जिसमें ब्रह्म तत्व, प्रकृति का विवेचन जीव-तत्त्व, जगत-तत्त्व और पुरुषोत्तम।

2. व्यवहार पक्ष: जीवन का अध्यात्म पक्ष सुदृढ़ है और समन्वयात्मक है। उतना ही गीता का व्यवहार पक्ष उत्तम और मनोरम है। इसमें विभिन्न मार्गों का समन्वय है: प्रवृत्ति मार्ग, निवृत्ति मार्ग, कर्म योग, ज्ञान योग, ध्यान योग, भक्ति योग, समन्वय मार्ग, और स्थितप्रज्ञावस्था।

गीता का सुलभ साधन: इसमें भक्तों के अनेक प्रकार के साधन मार्ग बतलाये गये हैं।

3. गीता का आदर्श भाव:- गीता के अनुसार जीवन का आदर्श क्या है? आदर्श मानव का जीवन कैसा होना चाहिये? इसके लिये इसे कर्तव्य शास्त्र भी माना जाता है। आदर्श मानव का वर्णन गीता में तीन स्थानों में प्राप्त होता है -

स्थितप्रज्ञ (अध्याय 2, श्लोक 55-72)

भक्त (अध्याय 12, श्लोक 13-19)

गुणातीत (अध्याय 14, श्लोक 21-27)

इस प्रकार गीता का विषय अवगाहन किया जा सकता है।

गीता के प्रेरक संदर्भ: गीता में मनुष्य के जीवन के व्यावहारिक पक्ष को इतना सुदृढ़ बनाया गया है जिसको धारण करके मनुष्य लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। गीता द्वारा प्रेरित संदर्भ इस प्रकार हैं - प्रथम अध्याय में कि कर्तव्य विमूढ़ अर्जुन को कर्मयोग, ध्यानयोग और भक्तियोग के उपयोग की उपयोगिता का उपदेश।

शोक-मोह से निवृत्ति के उपाय (अध्याय 1/4)
आत्मज्ञान से शोक निवृत्ति की प्रेरणा
कार्याकार्य निर्धारण
गीतोक्त कर्म का स्वरूप
पाप-पुण्य का स्वरूप
चातुर्वर्ण्य विवेचन
स्वार्थ एवं परोपकार कर्म (अध्याय 2/1)
मानवता की रक्षा
मनोनिग्रह विद्या
योगभ्रष्ट की गति और सद्गति
सगुण और निर्गुण की विद्या (अध्याय 4/8)
सगुण उपासना की सरसता
ज्ञान और भक्ति

गीतोक्त कर्म का स्वरूप

पांच मुख्य का स्वरूप
चातुर्वर्ण्य विवेचन
स्वार्थ एवं परोपकार कर्म (अध्याय 2/1)
मानवता की रक्षा
मनोनिग्रह विद्या
योगभ्रष्ट की गति और सद्गति
सगुण और निर्गुण की विद्या (अध्याय 4/8)
सगुण उपासना की सरसता
ज्ञान और भक्ति

विभिन्न विषयों से संदर्भित श्लोक एवं अध्याय

अद्वैत सिद्धांत / जीवन का सत्य / दृष्टि और सृष्टि / नास्तिक और आस्तिक / शास्त्रोक्त धर्म / धर्म विधेय -4/35-36

यज्ञादि का परमफल -2/70

सिद्धी प्राप्ति -18/46

सर्वश्रेष्ठ मित्र -6/5

समता का व्यवहार -6/29

दृढ़ आत्मविश्वास -7/7

अवसर अनुसार व्यवहार -9/18

सब का कल्याण -9/22

महान हृदय की कल्पना -11/5

सत्कर्मियों के प्रति प्रेम -12/20

हृदय स्पर्शी नेतृत्व -13/14-17

होनी स्वीकारना -2/11

धैर्य और सहनशीलता -2/14

सुख-दुःख में समभाव -2/38

कर्म में लीन रहना -2/47

आत्म संयम -2/64

पारस्परिक संयोग और समर्थन -3/11

विनम्र बनें -3/21

साहस सबसे बड़ा बल -2/3

इस प्रकार व्यावहारिक जीवन के विवेक सूत्रों का संपुट हमें गीता में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त कर्म की गति अत्यंत गहन है, अध्याय 4 के श्लोक 17 में कहा गया है। ज्ञान के प्रख्यात व्यवहार सिद्धी गीता के अध्याय 4 श्लोक 35 में वर्णित है। जीवन का कर्तव्य परतंत्रता और स्वतंत्रता 18 अध्याय श्लोक 7 में तथा (18/61), 16/19 में देखा जा सकता है।

जन्म और संस्कार आदि पूर्व कर्म के अनुसार ही होता है (6/44)।

दुःख का आरंभ कर्म से (6/24-25)

जीवन तथा जगत की परिवर्तन शीलता (18/51-55)

शोक की निवृत्ति के उपाय (2/11)

इस प्रकार गीता के प्रेरक संदर्भ अनेकविध प्राप्त होते हैं। गीता के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उस समय भारत में चार प्रकार के मार्ग प्रचलित थे-

1-धर्म मार्ग 2-ज्ञान मार्ग 3-ध्यान मार्ग 4-भक्ति मार्ग

जिस मार्ग का अनुसरण करने में जिसे खुशी मिलती थी, वही मार्ग उसे श्रेष्ठ समझता था। जिस प्रकार प्रयाग में त्रिवेणी भूमि को पवित्र करती है, उसी प्रकार गीता ज्ञान जिज्ञासुओं के कर्म और भक्ति मार्ग को सुदृढ़ करती है। ज्ञान और कर्म का समन्वय भक्ति से ही हो सकती है। भक्त ही यथार्थ ज्ञानी और कर्म योगी ही हो सकता है। गीता एक व्यवहार शास्त्र है। गीता की पुस्तक में "ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे" शब्द मिलता है जिसमें दो महत्व शब्द हैं— योग शास्त्र है, कर्तव्य शास्त्र और ब्रह्मविद्या है। जीवन संग्राम में अपनी विशुद्ध शक्तियों से लड़ने का ज्ञान वह व्यक्ति कभी दुःखों से उद्विग्न नहीं होता है।

संस्कृत वाङ्ग्मय में श्रीमद्भगवद्गीता का महत्त्व : श्रीमद्भगवदगीता' का पौराणिक साहित्य में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण संरकृत वाडमय में अत्यन्त महत्त्वपूण सथान है । लोकप्रियता की दष्टि से भी 'श्रीमदभगवदगीता" का सर्वोच्च स्थान है । श्रीमदभगवदगीता का माहात्म्य वाणी द्वारा व्यक्त करना सम्भव नही हा। इस सम्पूर्ण उपनिषदो का सारतत्त्व तथा नवनोत कहा जाता है । यह एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है क्योंकि इसक सूत्र पशु को देवता और देवता को ब्रह्म बना देने में समर्थ हैं । वर्तमान काल में हिन्द धर्म का जो स्वरूप दष्टिगोचर होता है., वह 'श्रीमदभगवदगीता" से ही अनुप्राणित है। 'श्रीमदभगवदगीता' को विद्वदज्जनों की प्रतिभा का निकष माना जाता है जनसाधारण में भी जितना सम्मान श्रीमदभगवदगीता' का है वह अन्य किसी ग्रन्थ का नही ।

निष्कर्ष: - इस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता के सूत्रों पर जीवन की सुदृढ़, सफल, सहृदयी, शास्त्रीय, धार्मिक, एवं निःश्रेयस सिद्धी प्राप्त कराने वाला ग्रंथ माना जाता है। इसके प्रेरक सूत्रों पर चिंतन, मनन और व्यवहार में प्रयोग करने से हर व्यक्ति व्यवहार शुद्धि से परमार्थ सिद्धि तक जा सकता है। उपनिषद के सिद्धांतों की, गीतोक्त कर्म सिद्धांत रूप हर मानव, हर वर्ग, जाति, पारिवारिक दृष्टि की, परस्पर संबंध दृष्टि की, धर्म दृष्टि से, अर्थ दृष्टि से, काम दृष्टि से और मोक्ष दृष्टि से गीता के अनेक प्रेरक संदर्भों के आधार पर अपने जीवन के विविध संकटों से निकालते हुए अपना जीवन सार्थक बना सकता है।

संदर्भ – ग्रंथ

1- महाभारत भीष्म पर्व -25/42, गीताप्रेस गोरखपुर

2- महाभारत आदिपर्व – 53 / 124 -165, गीताप्रेस गोरखपुर

3- श्रीमदभगवदगीता - गीताप्रेस गोरखपुर

4- गीतारहस्य – बलगंगाधर तिलक , पृष्ठ -517

5- भगवद्गीता – भीष्म-पर्व, गीता प्रेस गोरखपुर